International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

इस्लाम धर्म का उद्भव एवं प्रचार–प्रसार मे मुस्लिम शासको की भूमिका

राकेश कुमार, शोधार्थी,

इतिहास विभाग, म.द.वि., रोहतक।

Email: rakeshinsan786@gmail.com

सारांश– इस्लाम का आगमन विश्व इतिहास में एक युगातंरकारी घटना थी । आज भारतीय उपमहाद्वीप (भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश) में 5.20 मिलियन से अधिक मुस्लमान हैं। जिससे यह दुनिया में मुस्लमानों की सबसे बड़ी आबादी केन्द्रों में से एक हैं। चूंकि इस्लाम भारत मुस्लमानों के आने से ही प्रवेश किया था, इसने विभिन्न क्षेत्रों की ओर उसके लोगों के लिए बहुत योगदान दिया हैं। आज भारत इस तरह के एक बड़े पैमाने का मुस्लिम भूमि के अस्तित्व के बारे के कई सिद्धान्त बताता हैं। इसने भारत के राजनीतिक, धार्मिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला हैं। मुहम्मद–विन–वासिम (711–12), महमूद गजनी (1000–27) और मुहम्मद गौरी (1175–1205) के आक्रमणों ने न केवल भारत के राजपूत राजाओं और मुस्लिम आक्रमणताओं के बीच युद्ध–संघर्ष के अपितु सांस्कृतिक शक्तिओं की दो सबल धार्मिक धारणाओं और धाराओं के बीच प्रबल सम्पर्कों को भी दर्शाया हैं । दोनों शक्तियों के बीच क्रमशः संघर्ष, सहयोग, अन्मोन्य क्रिया एवं संश्लेषण मध्यकालीन भारत के दीर्घ और विविधापूर्ण इतिहास के विभिन्न चरण हैं।

मूल शब्द– खानाबदोश, बददू, हिरा–गुफा, नबी, रसूल, मक्का, हिजरी, इस्लाम, खलिफा।

प्रस्तावना– सातवीं सदी में अरब एक नए धार्मिक आंदोलन इस्लाम का केन्द्र बना।[1] अरब प्रायद्वीप अमेरिका के क्षेत्रफल के लगभग एक–तिहाई भाग के बराबर हैं।[2] अरब व्यापक आयामों वाला एक प्रायद्वीप हैं। यह पश्चिम में लाल सागर, पूर्व में फारस की खाड़ी तथा दाक्षिण में अरब सागर से घिरा हैं। इस प्रायद्वीप का अधिकतर हिस्सा या शुष्क चरागाह हैं या मरूस्थल हैं। इस क्षेत्र में नियमित रूप से बारिश बहुत कम होती हैं। तीन–चार साल को लिए सूखा पड़ना इस क्षेत्र के लिए सामान्य बात हैं। प्रायद्वीप के कुछ हिस्सों में तो लगातार 10 साल तक बारिश नहीं होती । इस बंजर इलाके में खाना–बदोश कबीलाई समुदाय रहा करते थे, जिन्हें 'बददू ' कहा जाता था।[3]

छठी शताब्दी के दौरान अरब के अंदर धीरे–2 कुछ परिवर्तन आ रहा था, कुछ कबीलों ने खाना–बदोशीं को छोड़कर, व्यापार को अपना पेशा बना लिया था । व्यापार से सभंवत इतनी आमदनी हो जाती थी कि बस्ती के लोगों का जीवन यापन हो जाता था।[4]

सातवीं शताब्दी तक भारत अरब संबंध केवल व्यापारिक ही था क्योंकि अभी तक अरब में केवल मूर्ति– पूजा होती थी और खानाबदोश जनजातियों का एक मुखिया होता था । ये घुम्मकड़ जीवन व्यतीत करते थे। शराब पीना और जुआ खेलना इनका मुख्य गुण था। अरब वासी अंधकार में डूबे हुए थे तथा अंधविश्वास का बोलबाला था। इस समय तक भारत और अरब के बीच केवल व्यापारिक संबंध थे, कोई राजनीतिक तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान नहीं था।[5]

मौलाना शिवली, जो हमारे देश में हजरत मुहम्मद के सबसे बड़े जीवनी लेखक हैं, हजरत मुहम्मद को केवल उनकी नैतिक और धार्मिक शिक्षाओं के आधार पर ही 'एक गुणी व्यक्ति' नहीं समझते । हजरत मुहम्मद की कोई भी जीवनी चाहे वह कितनी ही संक्षिप्त क्यों नहीं , उनकी धार्मिक शिक्षाओं की अवहेलना नहीं कर सकती।

कुरैश जनजाति के हाशिम के पुत्र अब्दुल मुतालिब के पुत्र अबदुल्ला के पुत्र हजरत मुहम्मद का जन्म 570 ई0 में मक्का में हुआ । इनके जन्म से पूर्व ही इनके पिता की मृत्यु हो गई थी और जिस समय वे छः वर्ष के थे उनकी माता अमिना का भी देहांत हो गया । इनका पालन पोषण इनके चाचा अबू तालिब ने किया जो कि कबीले के स्वामी तथा उनके चचेरे भाई अली के पिता थे। बचपन में मुहम्मद को अपने चाचा के यहां बकरियों की देखभाल करनी पड़ती थी। युवावस्था में उन्होंने अपनी कारवां का प्रबंध किया और विश्वसनीय कार्यकर्ता के रूप में जीविकापार्जन का एक अच्छा साधन बनाया।[6]

पच्चीस वर्ष की आयु में 40 वर्षीय विधवा महिला खदीजा से विवाह कर लिया। जिनके कारवों का वह प्रबंध कर चुके थे। मुहम्मद साहब आरंभ से आध्यात्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। वह मूर्ति से घृणा करते थे और जनता को अज्ञानता से दूर करने के का प्रयास करते थे। हदीस के अनुसार, वह प्रायः अपना भोजन–पान करके हीरा की आराम रहित गुफाओं में ध्यान करने के लिए बहुत दिनों तक एकांत वास किया करते थे।

करीब 610 ई0 मोहम्मद एक तीव्र आध्यात्मिक अनुभव हुआ जिसे उनकी पैगम्बरी की शुरूआत माना जाता हैं तथा वे एक 'नबी' (सिद्ध पुरूष) और 'रसूल' (देवदूत) कहलाए। उन्हें दैविक समझो जाने वाली कई प्रकटन हुए। ये उनके धार्मिक अभियान या तबलीग के आधार बने। मुहम्मद का मजहब मक्कावासियों को धार्मिक प्रथाओं से सर्वथा भिन्न था। उनका जबरदस्त विरोध किया गया क्योंकि उन्होंने मक्कावासियों के परम्परागत विश्वासों की निदां– आलोचना की थी।[7] मक्का में अपनी स्थिति अच्छी न

देख उन्होंने वहां से 22 जुलाई 622 ई0 को मदीना के लिए प्रस्थान किया। इस घटना को इस्लाम में हिजरी (हिजरत) कहा गया। मदीना में अनेक व्यक्ति मुहम्मद के अनुयायी बन गए और उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। 630 ई0 में वे मक्का आ गए और अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उन्होंने अल्लाह को सर्वशक्तिमान माना । 8 जून 632 ई0 मुहम्मद की मृत्यु हो गई। तब तक वे सम्पूर्ण अरब में इस्लाम फैला चुके थे। वह कबीलाई संगठन की जगह एक राज्य की स्थापना करने में सफल रहे थे। इस्लाम मे किसी प्रकार का जाति बंधन नहीं था। भाईचारे एवं समानता की भावना का समावेश था। इस्लाम की अनुयायियों में अपने धर्म को फैलाने की भावना कूट– कूट कर भरी हुई थी। इसीलिए उन्होंने इसे फैलाने के लिए हथियारों का भी खुलकर प्रयोग किया और यह शीघ्र ही इस्लाम विश्व में मुख्यतः मध्य एशिया और पश्चिम एशिया में फैल गया।

प्रथम चार खलिफाओं अबू बकर (632–34), उमर (634–644), उस्मान (644–56) और अली (656–61) के समय इस्लाम ने विशेष प्रगति की और सम्पूर्ण विश्व में इस्लाम का बोलबाला हो गया। जिन–जिन देशों में अरब सेना गई। वहां– वहां इस्लाम ने अपनी जड़े जमा ली। अंतिम खलिफा अली, जोकि हजरत मुहम्मद के दामाद थे, 661 ई0 में एक खराजी द्वारा हत्या कर दी गई। 661–750 ई0 के मध्य अरब में उम्मैयद वंश का शासन रहा तथा राजधानी दमिश्क स्थानातांरित कर दी गई। उम्मैयद वंश के अंतिम खालिफा की एक व्यक्ति के द्वारा हत्या कर दी गई। और अब अरब में अब्बासी खालिफाओं की सत्ता स्थापित हुई। इन्होंने 750–1258 तक लगभग 500 वर्षों तक शासन किया तथा राजधानी बागदाद बनाई। लेकिन अब्बासी शासकों ने महज एक सौ वर्षो तक सर्वोच्च सत्ता मिली। उसके बाद वे नाममात्र के लिए शासक रहे।

भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश –

712 ई0 तक भारत अरब के संबंध केवल व्यापारिक थे। परन्तु इस्लाम के जन्म के बाद मुस्लिम शासकों ने अपने धर्म को विश्व धर्म में परिवर्तित करने की भावना काफी प्रबल हो गई थी । इसलिए खलीफा वालिद प्रथम ने भारत पर विजय पाने के लिए मोहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में एक सेना भेजी तथा इस सेना ने सिंध पर विजय प्राप्त की[8] और इस्लाम को स्थापित किया इससे पूर्व अनेक मुस्लिम व्यापारी और मौलवी भी यहां इस्लाम का प्रचार कर चुके थे। इस संदर्भ में टी. आरनोल्ड का कथन हैं कि, ‘‘धर्मान्ध मुस्लिम शासकों के प्रयास से नहीं बल्कि व्यापारियों एवम् मौलिवियों के प्रयोगों से इस्लाम विश्व के कोने–2 में पहुंचा।’’

कुछ समय बाद अरब में गजनवी राजवंश का उद्‌य हुआ, इसका संस्थापक अल्पतगीन था जो कि सामानियों का एक तुर्क दास अधिकारी था।[9] अल्पतगीन के बाद गजनी का शासक सुबुक्तगीन बना और उसने हिंदू शाही राज्य पर चढाई की। सन् 999 ई0 में महमूद गजनी ने गजनवी राजवंश की राजगदद्दी संभाली तथा भारत पर लगाातार 17 बार आक्रमण किया। इस प्रक्रिया में गजनी ने धन संपदा अर्जित करने के साथ–2 इस्लाम का प्रभाव भी भारत में काफी जोर–शोर से किया। महमूद के साथ विभिन्न विद्वान अलबेरूनी, फिरदौसी आदि भी भारत आए तथा इन्होंने भी इस्लाम के प्रचार– प्रसार में बहुत योगदान दिया।[10]

महमुद की मृत्यु के उपरांत गजनी साम्राज्य उसके दुर्बल उत्तराधियों के अधीन द्रुतगति से विघटिंत हो गया। शिहाबुदीन उर्फ मुइजुदीन जो कि मुहम्मद गौरी के नाम से अधिक विख्यात था[11] गजनी साम्राज्य पर अपने नियंत्रण सुदृढ़ करने के बाद उसने भारत विजय तथा इस्लाम धर्म के प्रचार की ओर अपना ध्यान अग्रसर किया[12], मुहम्मद गोरी ने मुल्तान, सिंध तथा पंजाब के रास्ते से भारत में प्रवेश किया तथा उसके साथ विभिन्न मौलवी, उलेमा, विद्वान, इतिहासकार आदि साथ आए । जिन्होंने भारत में इस्लाम धर्म के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

निष्कर्ष– यद्यपि भारत देश अनेक धर्म सम्प्रदाय विद्यमान थे। ये सम्प्रदाय भी अनेक उप–सम्प्रदायों में विभक्त थे। अतः अनेक प्रकार के धार्मिक विश्वास एवं मान्यताएं भी प्रचलित थी। इन मान्यताओं के मूल में भारतीयों की व्यक्तिवादीं मनोवृति निहित थी जबकि इस्लामिक समाज की एकता भारत के धार्मिक क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में अंसभव थी। भारतीय नियमवादी एवं भाग्यवादी होने के कारण मुस्लमानों के समय पराजय को भी पूर्व जन्मों का फल मानते थे। यही कारण हैं कि भारतीयों ने कभी एक जुट होकर गौरी तथा अन्य मुस्लमान आक्रमणकारियों का प्रतिरोध नहीं किया। दूसरी ओर तुर्को ने भारत में जिहाद के नारे लगाए और हिन्दुओं के विरूद्ध युद्ध को धर्मयुद्ध की संज्ञा दी। इस प्रकार, इस्लाम भारत के साथ–साथ विश्व के अन्य देशों में फैला ।

संदर्भ–सूची :

1. फारूकी, अमर, प्राचीन और मध्यकालीन सामाजिक संरचनाएं और सांस्कृतियाँ, (अनुवादक शाहिद अख्तर), ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2003, पृष्ठ–265.
2. हबीब, मुहम्मद व निजामी, खलिक अहमद, दिल्ली सुल्तनत भाग–1, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, 1970, पृष्ठ–1.
3. फारूकी, अमर, पृष्ठ–265.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

4. वहीं, पृष्ठ–270.
5. प्रतियोगिता दर्पण, ऐच्छिक विषय, भारतीय इतिहास– मध्यकालीन भारत, पृष्ठ–36.
6. हबीब और निजामी, पृष्ठ–4.
7. फारूकी, अमर, पृष्ठ–272.
8. झा, डी. एन., श्रीमाली कृष्ण मोहन, प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, 1981, पृष्ठ–351.
9. चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत, भाग–1, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्टरीब्यूटर्स, दिल्ली, 2010, पृष्ठ–3.
10. वही, पृष्ठ– 6–9.
11. मेहता, जे0 ए0, मध्यकालीन भारत का वृहत इतिहास, भाग–1, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स, दिल्ली, 2002, पृष्ठ–95.
12. वहीं, पृष्ठ–96.

....